ज्योतिषशास्त्र का वैज्ञानिक मूल्यांकन

डॉ. जयन्त नरलीकर

क्योंकि मैं खगोल विज्ञान (Astronomy) का विद्यार्थी हूँ, इसलिए कई लोग मुझसे अनेक प्रश्न पूछते हैं, विशेष कर निम्नलिखित है :-

1. क्या ग्रहों का मानव जीवन पर असर पड़ता है ?
2. किसी व्यक्ति की जन्मकुण्डली से उस व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का पता चलाना कैसे सम्भव हो पाता है ?
3. क्या इस विश्वास में कोई तथ्य है कि पूर्णिमा के दिन का मानसिक रोगियों पर एक खास किस्म का प्रभाव पड़ता है ?
4. क्या ज्योतिषशास्त्र एक विज्ञान है ?

इन प्रश्नों पर वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया जाना चाहिए, क्योंकि इस किस्म के विश्वासों को लम्बे समय से समाज में फैलाने का प्रयत्न किया गया है। समाज में ज्योतिषशास्त्र की जड़ें गहरी होती गयी हैं। न सिर्फ निरक्षर और अशिक्षित बल्कि राजनीतिज्ञ, उद्योगपति और उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी ज्योतिषशास्त्र में विश्वास करते हुए पाये गये हैं।

क्या ज्योतिषशास्त्र विज्ञान पर आधारित है ? पूरी जांच के बिना इस प्रश्न का वैज्ञानिक उतर देना सम्भव नहीं है । जिस तरह किसी रोगी की पूरी जांच किये बिना उसे औषधि देना वैज्ञानिक नहीं माना जाएगा, उसी तरह ज्योतिषशास्त्र के वैज्ञानिक परीक्षण के बिना उसे अवैज्ञानिक करार देना उचित नहीं होगा । ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिक जांच से क्या पता चलता हैं ?

सबसे पहले तो हम इस दावे की परीक्षा करें कि ज्योतिषशास्त्र (Astrology) और मौसम विज्ञान (meterology) दोनों विज्ञान की दृष्टि से एक ही श्रेणी में हैं, क्योंकि दोनों मे ही भविष्यवाणियाँ की जाती हैं ।

मौसम के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए पृथ्वी के वायुमण्डल में विस्तृत जानकारी आवश्यक है। भाप, पानी, वर्फ और बादलों आदि की वर्तमान स्थिति और उनमें परिवर्तन, स्थानीय भूतल बनावट पर उनका प्रभाव, मानव क्रियाओं का वायुमण्डल पर प्रभाव आदि की जानकारी मौसम की भविष्यवाणी के लिए जरूरी होती है।

'इस सम्बन्ध में गणितीय और भौतिकीय सिद्धान्तों के ज्ञान के बावजूद मौसम की भविष्यवाणी के लिए सुपर-कम्प्यूटर की आवश्यकता पड़ती है। हाल के दिनों में उपग्रहों के माध्यम से वायुमण्डल के बारे में जानकारी प्राप्त करना सम्भव हो सका है और अब मौसम की अधिक सही भविष्यवाणी कर पाना भी सम्भव है। दूसरी ओर, भौतिक विज्ञान के ऐसे कोई भी ज्ञात सिद्धान्त नहीं हैं, जो ज्योतिषशास्त्र को आधार प्रदान कर सकें । मौसम विज्ञान यह कह सकता है कि पर्याप्त सूचनाओं के अभाव और गणितीय प्रश्नों की जटिलताओं के कारण उसके लिए बिल्कुल निश्चित भविष्यवाणी कर पाना सम्भव नहीं हो पाता है, लेकिन ज्योतिषशास्त्र के पास ऐसा कोई बहाना नहीं है। संक्षेप में, ज्योतिषशास्त्र और मौसम विज्ञान को एक धरातल पर नहीं रखा जा सकता है। विज्ञान की कई शाखाएँ शुरू में अनुभव के आधार पर विकास की भिन्न अवस्थाओं से गुजरीं । जब इन विज्ञान की शाखाओं के बुनियादी नियमों को निश्चित रूप से निर्धारित नहीं किया जा सका था, तब इन्द्रियानुभव के माध्यम से निरीक्षण और प्रयोग द्वारा उनके तलाश का काम जारी था, और भिन्न व्यक्तियों ने बार-बार कुछ प्रयोगों को दुहराया और धीरे-धीरे उन विज्ञानों के बुनियादी सिद्धान्तों की खोज हो सकी । ज्योतिषशास्त्र के क्षेत्र क्या स्थिति हैं ?

ज्योतिषशास्त्रीय परीक्षण

मिशिगन स्टेट युनिवर्सिटी के एक मनोवैज्ञानिक बर्नी सिल्वरमेन ने 1967 और 1968 में हुए 2978 विवाहों और 478 तलाकों का ज्योतिषशास्त्रीय अध्ययन किया । दो ज्योतिषियों ने जन्मकुण्डलियों के आधार पर यह निर्धारित किया था कि किन जोड़ों के विवाह सफल और स्थायी होंगे और किनके असफल ।

इन अनुमानों सांख्यिकीय परीक्षण द्वारा वास्तविकता से तुलना करने के बाद सिल्वरमैन इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जन्मकुण्डलियों के आधार पर किये गये अनुमान और वास्तविकता के बीच बिल्कुल कोई सम्बन्ध नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह मानने को कोई कारण नहीं है कि जन्मकुण्डलियें के मेल होने पर विवाह सफल होते हैं और नहीं होने पर असफल ।

इसी तरह, सिल्वरमैन ने इसकी जांच की कि किसी व्यक्ति के जन्मकुण्डली में बताये गये गुणों और वास्तविक गुणों के बीच मेल है या नहीं । ज्योतिषियों के अनुसार एक खास किस्म की जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति सत्य, समानता और बुद्धि की परवाह करते हैं। सिल्वरमैन ने मनोवैज्ञानिक के 1600 विद्यार्थियां से पूछ ''आपके मुख्य गुण, पसन्द और नापसन्दी क्या हैं ?'' उनके जन्म-तिथि आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करने के बाद सिल्वरमैन ने उनकी जन्मकुण्डलियां बनायीं और ज्योतिषशास्त्रीय गणनाओं के आधार पर उनके गुणों, उनके पसन्द और नापसन्दी के बारे में अनुमान किया । उन्होंने पाया कि जन्मकुण्डलियों और वास्तविकता के बीच कोई मेल नहीं है। इस तरह, वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि किसी मानव के व्यक्तित्व और उसके जन्म के समय के बीच कोई सम्बन्ध नहीं है।

जीन-क्लॉड पैकर नाम के एक खगोल वैज्ञानिक ने कहा है, ''पृथ्वी पर कई लोगों का जन्म ध्रुवीय क्षेत्रों में होता है, और वे वहीं पर रहते भी हैं। वहां से वर्ष में कई महीनों तक कोई भी ग्रह दिखाई नहीं देता है। उदाहरण के तौर पर एक बड़े शहर मुरमैन्सक् से वर्ष में छः महीने न सूर्य और न कोई ग्रह और न ही 'शशिचक्र' के सितारे दिखाई देते हैं। जो 'दुखी' लोग इस दौरान पैदा होते हैं, वे अपनी जन्मकुण्डली बना ही नहीं सकते हैं! लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि वे निर्विध्न रूप में अपना जीवन यापन नहीं कर सकते है।''

1982 में जब सभी ग्रह पृथ्वी की एक ही ओर दिखाई पड़े थे, तब ज्योतिषियों ने पृथ्वी पर कई विपत्तियों की भविष्यवाणी की थी । वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ । पृथ्वी पर कई बार प्राकृतिक और मानव-निर्मित आपदाओं का सामना करना पड़ता है, लेकिन आज तक कोई भी ज्योतिषी यह प्रमाणित नहीं कर सका है कि इनका ग्रहों और धूमकेतुओं से कोई सम्बन्ध है। प्रसिद्ध हैली धुमकेतु 1985-86 में दिखाई पड़ा था इस पृथ्वी पर क्या बुरा असर हुआ ?

वैज्ञानिक टेड न्यूमैन ने एक छोटे गणितीय अभ्यास से एक रोचक निष्कर्ष निकाला है मान लें कि सभी ग्रह पृथ्वी की ओर ही आ जाएँ । उन सबके सम्मिलित गुरूत्वाकर्षण के कारण पृथ्वी पर की सभी वस्तुएँ उनकी ओर ही आकर्षित होगी । इस आकर्षण की शक्ति (Force) क्या होगी ? अगर यह आकर्षण पृथ्वी की दूसरी ओर हों, तो हम सब का भार या वजन कुछ घट जाएगा । यह कमी कितनी होगी ? अगर हम बैठे से उठ खड़े हो जाते है तो हमारी वजन में हल्की सी कमी आती है, क्योंकि ऐसे मे व्यक्ति के गुत्वाकर्षण का केन्द्र (Centre of Gravity) पृथ्वी से कुछ दूर चला जाता है । सभी ग्रहों के सम्मिलित आकर्षण का प्रभाव इस सूक्ष्म असर से भी कम होता है।

खगोल विज्ञान के विकास के साथ सूर्य और अन्य ग्रहों के बीच सम्बन्ध का पता चला । पहले ग्रीक लोग आकाशीय पिण्डो को ''प्लैनेट'' (Planet) कहा करते थे, यानी ''भ्रमणशील या ''धुमकेतू'' । क्योंकि ये आकाशीय पिण्ड कभी सूर्य के आगे और कभी पीछे दिखाई देते थे, इसलिए ग्रीक लोगों ने यह अनुमान लगाया कि वे अपनी स्वतन्त्र-इच्छा से इधर-उधर घूमते रहते हैं। यह भी मान लिया गया कि इन ''शक्तिशाली'' आकाशीय पिण्डों का मानव जीवन पर प्रभाव पड़ता है। अगर इसे ही ज्योतिषशास्त्र का आरम्भ माना जाता है, तो फिर ग्रहों के परिक्रमा पथ की समस्या के खगोल वैज्ञानिक समाधान के बाद इसका अन्त हो जाना चाहिए था । ग्रह अपनी मर्जी से इधर-उधर भ्रमण नहीं करते हैं। ये सूर्य के गुरूत्वाकर्षण के अनुसार घूमते हैं। न्यूटन के गणित के आधार पर इनके परिक्रमा पथ को निर्धारित किया जा सकता है। फिर भी ज्योतिष मे विश्वास अभी भी बना हुआ है।

आम लोगों को इस बात की जानकारी नहीं है कि, जैसा कि टेड न्यूमैन के उदाहरण से ज्ञात होता है,

ज्योतिषशास्त्र ग्रहों के प्रभाव को प्रमाणित करने के लिए गुरूत्वाकर्षण के आधार पर इस्तेमाल नहीं कर सकता है। ये सभी ग्रह हम से इतने दूर हैं कि पृथ्वी पर इनके गुरूत्वाकर्षण का बल नगण्य है।

वर्नम प्रभाव

1974 में 192 वैज्ञानिकों के संयुक्त हस्ताक्षर से एक वक्तव्य प्रकाशित हुआ । इनमें कई नोबेल प्राइज विजेता भी थे । इस वक्तव्य मे वैज्ञानिक दृष्टि से ज्योतिष की समीक्षा की गयी थी । इस वक्तव्य के अन्त में यह कहा गया था कि लोग ज्योतिष का सहारा इसलिए लेते हैं, क्योंकि वे सोचते हैं इसमें उन्हें दैनिक जीवन की समस्याओं का सामना करने से मुक्ति मिल जाएगी । उनकी चिन्ताएँ इस आश्वासन से दूर हो जाती है कि ग्रहों को तुष्ट और शान्त करने से उनका दुर्दिन दूर जो जाएगा, क्योकि वे ऐसा समझते हैं कि उनका दुर्दिन सुदूर ग्रहों के कारण है, जिसे मानव-प्रयत्नों से मिटाया नहीं जा सकता है। इसके अलावा जब उन्हें यह विश्वास को जाता है कि ग्रह ही उनके विरूद्ध हैं, तो उसे विपदाओं से संघर्ष करने की आवश्यकता भी महसूस नहीं होती है। इन्ही कारणों से लोग ज्योतिष का सहारा लेते हैं।

ज्योतिषशास्त्र के समथ्रक कहते हैं कि लोग उनके पास इसलिए आते हैं क्योंकि उनकी भविष्यवाणियाँ कभी गलत नहीं होती हैं। अगर ऐसा नहीं होता, तो लोगों ने कब का ज्योतिषशास्त्र को छोड़ दिया होता । इस सन्दर्भ में मैं ''बर्नम प्रभाव'' का जिक्र करना चाहूंगा ।

'बर्नम और बेली' नाम के एक सर्कस के मालिक, पी.टी.बर्नम, कहा करते थे कि उनके सर्कस में तरह-तरह की चीजें दिखायी जाती हैं, ताकि हर कोई अपनी रूचि का कोई विषय देख सके, और यही उनकी सर्कस की लोकप्रियता का कारण है।

ज्योतिष की भविष्यवाणी के साथ भी यही बात है। ये इतनी अस्पष्ट और व्यापक होती हैं कि हर कोई उनकी वैधता में विश्वास कर लेता है। उदाहरण के तौर पर जन्मकुण्डलीय भविष्यवाणी के इस मॉडल को लें :

''आपको बहुत ही इच्छा रहती है कि लोग आपको चाहें, तारीफ करें और आपके गुणों को पहचाने । अपने तीक्षण आत्मनिरीक्षण से आपने यह जान लिया है कि आप ऊँचें पद पर पहुँचेगें । इसके लिए आप में वांछनीय गुण भी हैं। आप में कुछ कमियाँ भी है, लेकिन आपके पास उन्हें दूर करने के उपाय भी है। बाहर से आप अनुशासित और नियन्त्रित नजर आते हैं। फिर भी, अन्दर-अन्दर आपको चिन्ताएँ परेशान करती है और आप असुरक्षित महसूस करते हैं। कभी-कभी आपको अपने निर्णयों के ठीक होने के बाद में सन्देह होता है। यदा-कदा आपको अपने जीवन में परिवर्तन और विविधता की आवश्यकता भी महसूस होती है। ..... ''

जन्मकुण्डली से अनुमानित इस किस्म की भविष्यवाणी की कोई भी व्यक्ति पसन्द करेगा और यह उस पर लागू भी होगी, क्योंकि थोड़ा सा सोंचने पर यह तथ्य सामने आएगा कि इस भविष्यवाणी से किसी विशेष बात का पता नहीं चलता है। इस तरह के वर्णन को हम ''बर्नम वर्णन'' कह सकते हैं। अगर किसी ज्योतिषी के लिए वास्तव में सटीक भविष्यवाणी करना सम्भव है, तो जन्मकुण्डली के आधार पर किये गये किसी व्यक्ति के वर्णन को ''बर्नम वर्णन की तुलना में अधिक सही ढंग से उस पर लागू होना चाहिए ।

ज्योतिषशास्त्र में विश्वास रखने के दुष्परिणाम

हालांकि ज्योतिषशास्त्र विज्ञान नहीं है, फिर भी इसमें विश्वास क्यों न किया जाय ? इसमें हर्ज ही क्या है? यह भी एक विचारधारा है। लेकिन इससे भी व्यक्ति और समाज को बहुत नुकसान पहुंचता है। कुछ उदाहरण लीजिए :

कुछ अनिवार्य कार्य जिन्हें तत्काल किया जाना चाहिए, शुभ घड़ी के इन्तजार में टाल दिए जाते हैं।

कुछ जोड़े विवाह की दृष्टि से एक-दूसरे के लिए उपर्युक्त होते हैं (कभी-कभी वे आपस में प्रेम भी करते हैं), फिर भी उनके विवाह को रोक दिया जाता है क्योंकि उनकी जन्मकुण्डलियाँ नहीं मिलती ।

ग्रहों को शान्त करने के लिए धार्मिक अनुष्ठानों में

फिजूलखर्ची की जाती है और पैसा बहाया जाता है।

अब यह अच्छी तरह मालूम है कि सूर्यग्रहण छाया या प्रतिबिम्ब का खेल है। फिर भी आम आदमी इससे डरता है। 1980 के सूर्यग्रहण के समय मुम्बई जैसे आधुनिक शहर की सड़कें भी वीरान हो गयी थीं ।

विज्ञान की आश्चर्यजनक प्रगति ने न सिर्फ सौरमण्डल, ग्रहों और उनके उपग्रहों के बारे में बल्कि सुदूर सितारों और आकाश-गंगा के बारे में भी जानकारी को सम्भव बना दिया है। बीसवीं सदी में मानव चाँद पर पहुँच गया 21वीं सदी में वह मंगल ग्रह पर भी पहुंच सकता है। 5-6 शताब्दी पहले जब मनुष्य को ग्रहों के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं थी, तब ज्योतिष में उसके विश्वास को माफ किया जा सकता था, लेकिन आज जबकि इतनी जानकारी उपलब्ध है, फिर भी कई शिक्षित व्यक्ति ऐसे विचारों में विश्वास रखते हैं जो विज्ञान की कसौटी पर असफल रहे हैं । उनके लिए इस तरह अपने समय, धन और ऊर्जा का अपव्यय कहाँ तक उचित है ?